## आत्मनिर्भर बनतीं सखी मंडल की दीदियां

# जिद से रानी मिस्त्री सीता ने बनायी अपनी अलग पहचान

पंचायतनामा डेस्क

**प्रखंड : कांके**
**जिला : रांची**

रांची जिला अंतर्गत नगड़ी गांव की रहनेवाली सीता कच्छप की पहचान आज सफल रानी मिस्त्री के तौर पर है. जिद की वजह से आज उनकी अपनी पहचान है. रांची में आयोजित एक कार्यक्रम में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के समक्ष सीता को अपना अनुभव साझा करने का मौका मिला. इतना ही नहीं, वह दिल्ली के एक निजी इंग्लिश न्यूज चैनल के स्टूडियो से भी लोगों को स्वच्छता व शौचालय के बेहतर इस्तेमाल व लाभ की जानकारी दे चुकी हैं. इस दौरान उन्होंने सुपरस्टार अमिताभ बच्चन व अभिनेता अक्षय कुमार से भी भेंट की.

रानी मिस्त्री सीता कच्छप.

### रानी मिस्त्री से बनी अलग पहचान

नगड़ी जैसे छोटे गांव में बीएससी फिजिक्स ऑनर्स की छात्रा सीता ने रानी मिस्त्री का काम करते हुए अपनी अलग पहचान बनायी हैं. कल तक, जो लोग उनका मजाक उड़ाते थे, आज उनकी मिसाल देते हैं. आज भी सीता अपने गांव में रानी मिस्त्री का काम करती हैं. हाथ में करनी लेकर शौचालय बनाती हैं और ग्रामीणों को उसके इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करती हैं. हालांकि, इस पहचान को पाने के लिए सीता कच्छप को काफी संघर्ष करना पड़ा. लोगों के ताने सुनने पड़े. यहां तक कि घर में आकर लोगों ने धमकी भी दी, लेकिन सीता ने हिम्मत नहीं हारी और अपना काम आगे बढ़ाती रहीं. परिणाम आज सबके सामने है. सीता को इस बुलंदी तक पहुंचाने में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रोमोशन सोसाइटी का भरपूर सहयोग रहा.

### महिला समूह से हुई सफर की शुरुआत

सीता और उसके पति पढ़ाई करते थे, लेकिन सीता की सास के निधन हो जाने के बाद घर में आर्थिक परेशानी शुरू हो गयी. आर्थिक संकट से निबटने के लिए सीता ने कुछ काम करने का मन बनाया. साल 2014 में सीता किसान शिव शक्ति महिला समिति से जुड़ गयीं. 2014 में ही उन्हें बुक कीपर का प्रशिक्षण मिला, वहीं साल 2017 में सक्रिय महिला का प्रशिक्षण मिला. समूह में कार्य करते हुए सीता के पास थोड़े- बहुत पैसे भी आने लगे. इससे घर चलाने में थोड़ी राहत मिली. सीता बचपन से ही समाज की सेवा करना चाहती थीं. लिहाजा, महिला समूह के जरिये सीता के बचपन की चाहत भी पूरी होने लगी.

### यूनिसेफ से रानी मिस्त्री का प्रशिक्षण

राज्य में जब सखी मंडल की महिलाओं को गांवों में शौचालय निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी गयी, तब नगड़ी में भी सखी मंडल की महिलाओं को यूनिसेफ के द्वारा रानी सखी का प्रशिक्षण दिया गया. इस दौरान मिस्त्री का काम करने के लिए उपकरण भी दिये गये. सीता बताती हैं कि शुरुआत के दिनों में जब शौचालय निर्माण हो रहा था, तब पुरुष मिस्त्री काम करने के लिए आते थे, लेकिन हमेशा कुछ न कुछ कारण से छुट्टी ले लेते थे, जिसके कारण शौचालय निर्माण में देरी हो रही थी. टार्गेट पूरा नहीं हो पा रहा था. सीता और गांव की अन्य महिलाओं ने तय किया कि वो खुद शौचालय निर्माण कार्य में लगेंगी.

### महिलाओं का हुआ विरोध

महिलाएं जब शौचालय बनाने लगीं, तो समाज और घर से ही उसका विरोध शुरू हो गया. कई महिलाओं के साथ मारपीट भी हुई. सीता समेत अन्य महिलाओं के पति ने भी यह काम करने से मना किया. कई बार तो ऐसा हुआ कि लोग घर में आकर काम नहीं करने की धमकी देने लगे. सीता के पति ने भी रानी मिस्त्री का काम करने से मना किया. ईंट और बालू की भी चोरी कर ली जाती थी. इसके बावजूद सीता ने हिम्मत नहीं हारी और गांव की अन्य महिलाओं को रानी मिस्त्री का काम करने को प्रोत्साहित करती रहीं.

### परिश्रम से मिली सफलता

रानी मिस्त्री के तौर पर बेहतर कार्य करने के कारण सीता को नयी पहचान मिली. यूनिसेफ के द्वारा सीता को दिल्ली बुलाया गया, जहां उन्होंने एक इंग्लिश न्यूज चैनल के स्टूडियो में बैठ कर अपने विचार साझा किये. इस कार्यक्रम में अभिनेता अमिताभ बच्चन और अक्षय कुमार भी ऑनलाइन जुड़े थे. अक्षय कुमार ने सीता की तारीफ करते हुए कहा था कि असल में सीता जैसी महिलाएं ही स्वच्छता की ब्रांड अंबेसडर हैं.

### समाज से मिली स्वीकार्यता : सीता कच्छप

रानी मिस्त्री सीता कच्छप बताती हैं कि अब घर और समाज से उनके कार्य को स्वीकार्यता मिल गयी है. पति का भी पूरा सहयोग मिलता है. कल तक जो लोग मजाक उड़ाते थे, अब घर आकर उनके काम की तारीफ करते हैं. सीता बताती हैं कि बचपन से उन्हें समाजसेवा करने का बहुत शौक था. महिला समूह से जुड़ कर उनकी यह इच्छा पूरी हो रही है. इस कार्य के लिए वह जेएसएलपीएस का तहेदिल से शुक्रिया अदा करती हैं. वह कहती हैं कि आजीविका ने उन्हें रानी मिस्त्री के रूप में अलग पहचान बनाने में भरपूर सहयोग किया. सीता बुजुर्गों और अनाथ बच्चों की सेवा करना चाहती हैं.

सखी मंडल की दीदियों को चेक देते मुख्यमंत्री रघुवर दास व अन्य.

एक ओर जहां रांची के नगड़ी गांव की सीता कच्छप ने रानी मिस्त्री बनकर उपराष्ट्रपति के समक्ष अपना अनुभव साझा किया, वहीं दूसरी ओर जेएसएलपीएस से जुड़ीं **अंकिता टोप्पो** ने पलामू जिले में आयोजित किसान समागम की रिपोर्टिंग कर सकारात्मक बदलाव की मिसाल पेश की है.

# महिला सशक्तीकरण पर जोर दे रही सरकार : रघुवर

**डालटनगंज**
**जिला : पलामू**

पलामू प्रमंडल के लोगों का मुख्य पेशा कृषि है. बरसात कम होने के कारण किसानों को सिंचाई में खासी परेशानी होती है. इसे देखते हुए रघुवर सरकार ने राज्य के 129 प्रखंडों को सूखाग्रस्त घोषित करने की अधिसूचना केंद्र सरकार को भेजी है. किसानों की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से 19 नवंबर 2018 को मेदिनीनगर के पुलिस लाइन स्टेडियम में किसान समागम का आयोजन हुआ. इस अवसर पर मुख्यमंत्री रघुवर दास समेत काफी संख्या में किसान व स्थानीय लोगों ने शिरकत की. मौके पर मुख्यमंत्री ने पलामू में समाहरणालय, जीएनएम कॉलेज और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत निर्मित आवास का उद्घाटन किया. वहीं सॉयल हेल्थ कार्ड भी वितरित किये. कार्यक्रम के दौरान परिसंपत्तियों का वितरण किया गया और विभिन्न सरकारी योजनाओं के लिए चेक भी बांटे गये. मौके पर इजरायल से लौटे किसान ध्रुव कुमार सिंह ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए सामूहिक खेती के लाभ के बारे में बताया. उन्होंने सूखे क्षेत्र में भी आधुनिक तकनीक से बेहतर खेती करने के बारे में बताया.

➲ **पलामू प्रमंडल के किसानों का समागम, सखी मंडल की दीदियों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण**

### पशुपालन करें किसान, दूध और खाद दोनों मिलेगा : मुख्यमंत्री

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री रघुवर दास ने किसानों को जैविक खेती पर विशेष जोर देने के लिए प्रोत्साहित किया. किसान खेती की आधुनिक तकनीक जैसे- ड्रीप इरिगेशन, स्प्रिंकलर्स आदि को अपनाएं, ताकि उत्पादकता में बढ़ोतरी हो सके. किसान पशुपालन पर भी जोर दें. इससे किसानों को दूध भी मिलेगा और गोबर से खाद की कमी भी नहीं होगी. इससे किसानों को दोहरा लाभ मिलेगा. किसानों को फसल बीमा कराने और सामूहिक खेती पर भी जोर देना चाहिए, ताकि 2022 तक किसानों की आय दोगुनी हो सके. महिलाओं के सशक्तीकरण पर भी राज्य सरकार कार्य कर रही है. राज्य में गरीबी को जड़ से मिटाने के लिए राज्य सरकार कई योजनाओं पर कार्य कर रही है.

### योजनाओं के तहत राशि का वितरण

किसानों के बीच पंप सेट, बकरी, सूकर, गाय, बतख, एलपीजी कनेक्शन और लैपटॉप का वितरण किया गया. इसके अलावा सखी मंडलों के लिए कैश क्रेडिट लिंकेज के तहत पांच करोड़ दो लाख रुपये और रिवॉल्विंग फंड के लिए दो करोड़ 21 लाख 10 हजार रुपये सखी मंडल की महिलाओं के बीच बांटे गये. पशुपालन विभाग की ओर से 3,45,75,440 रुपये का चेक सखी मंडल को दिया गया. इस राशि का वितरण महिला स्वावलंबन योजना के तहत 1120 लाभुकों के बीच किया जायेगा. वहीं, बतख-चूजा योजना के तहत 848 लाभुक और सूकर प्रजनन योजना के तहत 845 लाभुकों के बीच इस राशि का वितरण होगा. कृषि एवं पशुपालन विभाग की सचिव पूजा सिंघल ने कहा कि सभी सखी मंडल की महिलाओं के बीच इस राशि का वितरण किया गया.